॥ श्रीहरिः ॥

307▲

भगवान्‌की दया

(भगवत्कृपा एवं कुछ अमृत-कण)

गीताप्रेस गोरखपुर

GITA PRESS, GORAKHPUR

जयदयाल गोयन्दका

॥ श्रीहरिः ॥

भगवान्‌की दया

(भगवत्कृपा एवं कुछ अमृत-कण)

त्वमेव माता च पिता त्वमेव
त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव
त्वमेव सर्वं मम देवदेव॥

जयदयाल गोयन्दका

ॐ

भगवान्‌की दया

कुछ मित्र मुझे ईश्वरके सद्‌गुणोंके सम्बन्धमें लिखनेको कहते हैं, परन्तु मैं इस विषयमें अपनेको असमर्थ समझता हूँ, क्योंकि ईश्वरके सद्‌गुणोंका कोई पार नहीं है। संसारमें जितने उत्तम गुण देखने, सुनने और पढ़नेमें आते हैं, वे सभी परिमित— ससीम हैं और उस अप्रमेय—असीम परमात्माके एक अंशके द्वारा प्रकाशित हो रहे हैं। '**एकांशेन स्थितो जगत्**' (गीता १०। ४२)। परमात्माके गुणोंका सम्यक् प्रकारसे वर्णन कोई भी नहीं कर सकता। वेद-शास्त्रमें जो कुछ कहा गया है, वह सर्वथा स्वल्प ही है, अन्य गुणोंकी बात तो अलग रही, उस दयामयकी केवल एक दयाके विषयमें खयाल किया जाय तो मुग्ध हो जाना पड़ता है। अहा! उसकी असीम दयाकी थाह कौन पा सकता है? जब एक दयाका वर्णन ही मनुष्यके लिये

अशक्य है तो सम्पूर्ण सद्‌गुणोंका वर्णन करना असम्भव है। लोग उन्हें दयासिन्धु कहते हैं, वेद-शास्त्रोंने भी उनको दयाका समुद्र बताया है, परन्तु विचार करनेपर प्रतीत होता है कि यह उपमा समीचीन नहीं है, यह तो उसकी अपरिमित दयाके एक अंश-मात्रका ही परिचय है। क्योंकि समुद्र परिमित है और सब ओरसे सीमाबद्ध है। परन्तु अपरिमेय परमात्माकी दया तो अपार है, उसके साथ अनन्त समुद्रोंकी भी तुलना नहीं की जा सकती। अवश्य ही जो उन्हें दयासिन्धु और दयासागर बताते हैं, मैं उनकी निन्दा नहीं करता। कारण, संसारमें जो बड़ी-से-बड़ी चीज प्रत्यक्ष देखनेमें आती है, बड़ोंके साथ उसीकी तुलना देकर लोग समझाया करते हैं।

जहाँ मन और बुद्धिकी पहुँच नहीं, वहाँ एकबारगी उसका वाणीसे तो वर्णन हो ही कैसे

सकता है? तथापि जो कुछ वर्णन किया जाता है सो वाणीसे ही किया जाता है, चाहे वह कितना ही क्यों न हो, इसलिये भगवान्‌की दयाका जो वर्णन वाणीसे किया गया है, वह पर्याप्त नहीं है। ईश्वरकी दया उससे बहुत ही अपार है। परमात्माकी दया सम्पूर्ण जीवोंपर इतनी अपार है कि जो मनुष्य इसके तत्त्वको समझ जाता है, वह भी निर्भय हो जाता है, शोक-मोहसे तर जाता है, अपार शान्तिको प्राप्त होता है और वह स्वयं दयामय ही बन जाता है। ऐसे पुरुषकी सम्पूर्ण क्रियाओंमें भी दया भरी रहती है। उससे किसीकी भी हिंसा तो हो ही नहीं सकती।

दयामय परमात्माकी सब जीवोंपर इतनी दया है कि सम्पूर्णरूपसे तो उस दयाको मनुष्य समझ ही नहीं सकता। वह अपनी समझके अनुसार अपने ऊपर जितनी अधिक-से-अधिक दया समझता है,

वह भी नितान्त अल्प ही होती है। मनुष्य ईश्वरदयाकी यथार्थ कल्पना ही नहीं कर सकता। भगवान्‌की वह अनन्त दया सबके ऊपर समभावसे गंगाके प्रवाहकी भाँति नित्य-निरन्तर चारों ओरसे बह रही है। इस दयासे जो मनुष्य जितना लाभ उठाना चाहता है, उतना ही उठा सकता है। खेदकी बात है कि लोग इस रहस्यको न जाननेके कारण ही दुःखी हो रहे हैं। यह उनकी मूर्खता है। इन लोगोंकी वही दशा समझनी चाहिये, जैसी उस मूर्ख प्यासे मनुष्यकी है जो नित्य-निरन्तर शीतल सुमधुर जलको प्रवाहित करनेंवाली भगवती गंगाके किनारे पड़ा हो, परन्तु ज्ञान न होनेके कारण जल न ग्रहण कर प्यासके मारे तड़प रहा हो।

ईश्वरकी दया अपार है; परन्तु जो जितनी मानता है उतनी ही दया उसको फलती है, इसलिये उस ईश्वरकी जितनी अधिक-से-अधिक दया तुम

अपने ऊपर समझ सको उतनी समझनी चाहिये। तुम्हारी कल्पना जितनी अधिक होगी, तुम्हें उतना ही अधिक लाभ होगा। यद्यपि भगवान्‌की दयाका थाह उसी प्रकार किसीको नहीं मिलता, जैसे विमानपर बैठकर आकाशमें उड़नेवाले मनुष्यको आकाशका थाह नहीं मिलता, परन्तु इस दयाका थोड़ा-सा रहस्य जाननेपर भी मनुष्य कृतकृत्य हो जाता है। जैसे अथाह गंगाके प्रवाहमेंसे मनुष्यकी प्यास बुझानेके लिये एक लोटा गंगाजल ही पर्याप्त है वैसे ही उस अपार, अपरिमित दयासागरकी दयाके एक कणसे ही मनुष्यकी अनन्त जन्मोंकी शोकाग्नि सदाके लिये शान्त हो जाती है। यह तुलना भी पर्याप्त नहीं है, क्योंकि साधारण जलबुद्धिसे पीये हुए गंगाजलके एक लोटे जलसे तो मनुष्यकी प्यास थोड़ी देरके लिये शान्त होती है, परन्तु ईश्वरकी दयाके कणसे तो भय, शोक

और दुःखोंकी निवृत्ति एवं शान्ति और परमानन्दकी प्राप्ति सदाके लिये हो जाती है। अतएव सबको चाहिये कि उस परमेश्वरके शरण होकर उसकी दयाकी खोज करें।

भगवान्‌की दया सर्वथा-सर्वदा और सर्वत्र व्याप्त है। सुख या दुःख, जय या पराजय जो कुछ भी प्राप्त होता है, वह ईश्वरकी दयासे पूर्ण है और स्वयं ईश्वरका ही किया हुआ विधान है। उसीकी दया इस रूपमें प्रकट हुई है। मनुष्य जब इस रहस्यको जान लेता है तब उसे सुख और विजय मिलनेपर जो हर्ष प्राप्त होता है, वही दुःख और पराजयमें भी होता है। जबतक ईश्वरके विधानमें सन्तोष नहीं है और सांसारिक सुख-दुःखादिकी प्राप्तिमें हर्ष-शोक होता है, तबतक मनुष्यने भगवान्‌की दयाके तत्त्वको वास्तवमें समझा ही नहीं है। जब ईश्वरको कर्मोंके अनुसार फल देनेवाला, न्यायकारी,

परम प्रेमी, परम हितैषी, परम दयालु और सुहृद् समझ लिया जायगा, तब उनके किये हुए सभी विधानोंमें आनन्दका पार न रहेगा। विषयी और पामर पुरुषोंके हृदयमें तो स्त्री-पुत्र, धन-धामकी प्राप्तिमें क्षणिक आनन्द होता है, किन्तु दयाके मर्मज्ञ उस पुरुषको तो पुत्रकी उत्पत्ति और नाशमें, धनके लाभ और हानिमें, शरीरकी नीरोगता और रुग्णतामें तथा अन्यान्य सम्पूर्ण पदार्थोंकी प्राप्ति और विनाशमें, जैसे-जैसे वह भगवान्‌की दयाके प्रभावको समझता जायगा, वैसे-वैसे ही नित्य-निरन्तर उत्तरोत्तर अधिकाधिक विलक्षण आनन्द, शान्ति और समताकी वृद्धि होती जायगी।

जो पुरुष भगवान्‌की दयाके यथार्थ प्रभावको जान लेता है, उसके उद्धारकी तो बात ही क्या है? वह दूसरोंके लिये भी मुक्तिका दाता बन जाता है। क्योंकि भगवत्कृपा ऐसी ही वस्तु है। वह भगवत्कृपा

मूकको वाचाल बना देती है और पंगुको पर्वत लाँघनेकी शक्ति देती है। संसारमें न होनेवाले काम वह दया करा देती है। परमात्मा सर्व-समर्थ हैं, उनके लिये कोई भी काम अशक्य नहीं है। जीव सब प्रकारसे असमर्थ है, पर परमेश्वरकी दया और आज्ञासे वह भी चाहे सो कर सकता है। मच्छर ब्रह्मा बन सकता है। अब यह प्रश्न उठता है कि जब सभी जीवोंपर भगवान्‌की दया सर्वथा अपार और सम है, तब उनकी दुर्दशा क्यों हो रही है? इसका उत्तर यह है कि लोग भगवान्‌की दयाके प्रभावको नहीं जानते। एक दरिद्रके घरमें पारस है, परन्तु जैसे वह पारसका ज्ञान न होनेके कारण दरिद्रताके दुःखसे दुःखी हो दीनताके साथ भीख माँगता फिरता है, वैसे ही दयाके तत्त्वको न समझनेके कारण सब जीव दुःखी हो रहे हैं। लोगोंको चाहिये कि वे दयाके तत्त्वको जाननेके

लिये तत्पर होकर चेष्टा करें। परमात्माकी दया जाननेके लिये मनुष्यको परमेश्वरसे नित्य गद्‌गद-वाणीसे विनयपूर्ण प्रार्थना करनी चाहिये। प्रार्थनासे, भजन-ध्यानसे, उसकी दयाके महत्त्वको यत्किंचित् जाननेवाले पुरुषोंका संग करनेसे, सत्-शास्त्रोंके विचारसे और परमेश्वरके किये हुए समस्त विधानोंमें दयाकी खोज करनेसे मनुष्य दयाके तत्त्वको जान सकता है।

यद्यपि भगवान्‌की दयाके तत्त्वको बतानेवाले महात्माओंका मिलना बहुत कठिन है तथापि चेष्टा करनी चाहिये। जो महात्मा दयाके महत्त्वको कुछ जानते हैं वे भी जितना जानते हैं उतना वाणीद्वारा वर्णन नहीं कर सकते। क्योंकि भगवान्‌की इतनी दया है कि सारे संसारकी दयाको इकट्ठी करो तो वह भी दयासागरकी दयाके एक कणके बराबर नहीं हो सकती।

जिसके घरमें पारस है, उसकी दरिद्रताका नाश—जैसे पारसके प्रभावको जानते ही हो जाता है, वैसे ही भगवान्‌की दयाके प्रभावको समझनेपर मनुष्यके सब प्रकारके दुःखोंका सर्वथा नाश हो जाता है। जो मनुष्य भगवान्‌की दयाके प्रभावको जान जाता है, वह पद-पदपर उस दयालुका स्मरण करके नित्य-निरन्तर आनन्दमें डूबा रहता है। अपने ऐसे प्रियतम सुहृद्‌को कोई कैसे भूल सकता है? वह जो कुछ क्रिया करता है, सब उस परम दयालु परमेश्वरके आज्ञानुसार ही करता है। उसकी कोई भी क्रिया परमात्माकी इच्छाके विपरीत नहीं हो सकती। जब साधारण सत्पुरुष ही अपने उपकारी और दयालुको भूलकर उसके विपरीत क्रिया नहीं करता तब परमात्माकी दयाके प्रभावको जाननेवाले महात्मा पुरुष परमात्माको कैसे भूल सकते हैं और कैसे उनके विपरीत कोई क्रिया कर सकते हैं? ऐसे

पुरुषोंद्वारा किया हुआ आचरण ही 'सदाचार' कहलाता है और लोग उसे प्रमाण मानकर उसीके अनुसार चलते हैं—

यद्यदाचरति श्रेष्ठस्तत्तदेवेतरो जनः।
स यत्प्रमाणं कुरुते लोकस्तदनुवर्तते॥

(गीता ३। २१)

अब यह समझना चाहिये कि दया किसको कहते हैं। किसी भी दुःखी, आर्त प्राणीको देखकर उसके दुःख एवं आर्तताकी निवृत्तिके लिये अन्तःकरणमें जो द्रवतायुक्त भाव पैदा होता है उसीका नाम 'दया' है। परमेश्वरकी यह दया सब जीवोंपर समानभावसे सदा-सर्वदा अपार है। जीव कितना भी परमेश्वरके विपरीत आचरण करे, परन्तु परमेश्वर उसको सदा ही दयाकी दृष्टिसे देखते हैं। इसके उपयुक्त हमें संसारमें कोई उदाहरण ही नहीं मिलता। माताका उदाहरण दिया जाता है, वह कुछ अंशमें

ठीक भी है। बालक बहुत कुपात्र और नीच वृत्तिवाला है, नित्य अपनी माताको सताता है, गाली देता है, ऐसा होनेपर भी माता बालकके मंगलकी ही कामना करती है, कभी उसका पतन या नाश नहीं चाहती। यह उसकी दया है, परन्तु भगवान्‌की दयाको समझनेके लिये यह दृष्टान्त सर्वथा अपर्याप्त है। ऐसा भी देखा जाता है कि विशेष तंग करनेपर दुःख सहनेमें असमर्थ होनेके कारण स्वार्थवश माता भी बालकको त्याग देती है और कभी-कभी उसके अनिष्टकी इच्छा भी कर सकती है। परन्तु परमपिता परमेश्वरके कोई कितना ही विरुद्ध आचरण क्यों न करे, वह कभी न तो उसका त्याग ही करते हैं और न अनिष्ट ही चाहते हैं। यह उनकी परम दयालुताका निदर्शन है। विपरीत आचरण करनेवालेको भगवान् जो दण्ड देते हैं वह भी उनकी परम दया है। बालकके अनुचित आचरण करनेपर जैसे गुरु

उसके हितके लिये एवं उसे दुराचारसे हटानेके लिये दण्ड देता है अथवा जैसे चोरी करनेवाली और डाका डालनेवाली प्रजाको न्यायकारी राजा जो उचित दण्ड देता है, वह गुरु और राजाकी दया ही समझी जाती है, वैसे ही परमात्मारूप गुरुके किये हुए दण्ड-विधानको भी परम दया समझनी चाहिये। यह उदाहरण भी पर्याप्त नहीं है। गुरु तथा राजासे भूल भी हो सकती है, किसी अन्य कारणसे भी वे प्रमादवश दण्ड दे देते हैं, परन्तु ईश्वरका दण्ड-विधान तो केवल दयाके कारण ही होता है। हम जब परमात्माकी दयापर विचार करते हैं तो हमें पद-पदपर परमात्माकी दयाके दर्शन होते हैं। प्रथम तो परमेश्वरके नियमोंकी ओर ही देखिये, वे कितने दयासे भरे हैं। कोई जीव कैसा भी पापी क्यों न हो, अनेक तिर्यक् योनियोंके भोगनेपर उसको भी अन्तमें परमात्मा मनुष्यका शरीर देते ही हैं। यदि

उसके पापोंकी ओर ध्यान दिया जाय तो उसे मनुष्यका शरीर मिलनेकी बहुत ही कम गुंजाइश रह जाती है। परन्तु यह उस परमात्माकी हेतुरहित परम दयाका ही कार्य है जो पुनः उसको मनुष्य-शरीर देकर सुधारका मौका देता है।

गोसाईंजी कहते हैं—

आकर चारि लच्छ चौरासी।
जोनि भ्रमत यह जिव अबिनासी॥
कबहुँक करि करुना नर देही।
देत ईस बिनु हेतु सनेही॥

दूसरा कानून है, कोई कैसा भी पापी क्यों न हो, जब वह भगवान्‌की शरण हो जाता है अर्थात् जबसे सम्पूर्ण पापोंको छोड़कर भगवान्‌के अनुकूल बन जाता है तो भगवान् उसके पिछले सारे पाप नाश कर उसे तत्काल मुक्ति-पद दे देते हैं। भगवान् श्रीराम कहते हैं—

सकृदेव प्रपन्नाय तवास्मीति च याचते।
अभयं सर्वभूतेभ्यो ददाम्येतद्व्रतं मम॥

(वा० रा० ६। १८। ३३)

तीसरा कायदा है कि एक साधारण-से-साधारण मनुष्य भी परमात्माको प्रेमसे भजता है तो परमेश्वर भी उसको उसी प्रकार भजते हैं—'**ये यथा मां प्रपद्यन्ते तांस्तथैव भजाम्यहम्**' (गीता ४। ११)। इतना ही नहीं, परमेश्वरके भजनके प्रतापसे उसके पूर्वके किये हुए सब पापोंका नाश हो जाता है और वह शीघ्र ही परम धर्मात्मा बनकर दुर्लभ परम गतिको प्राप्त होता है। भगवान् श्रीकृष्णके वचन हैं—

अपि चेत्सुदुराचारो भजते मामनन्यभाक्।
साधुरेव स मन्तव्यः सम्यग्व्यवसितो हि सः॥
क्षिप्रं भवति धर्मात्मा शश्वच्छान्तिं निगच्छति।
कौन्तेय प्रति जानीहि न मे भक्तः प्रणश्यति॥

(गीता ९। ३०-३१)

जो परमेश्वरकी भक्ति करता है, उसकी वे सब प्रकारसे रक्षा और सहायता करते हैं एवं उचित बुद्धि देकर इस असार संसारसे उसका उद्धार कर देते हैं।

आप विचारिये कि इन कानूनोंमें परमात्माकी कितनी भारी दया भरी है। यही नहीं, भगवान्‌के सभी नियम इसी प्रकार दयापूर्ण हैं। विस्तार-भयसे यहाँ नहीं लिखे जाते। ऐसे दयाभरे नियम संसारमें माता, पिता, गुरु, राजा आदि किसीके भी यहाँ नहीं हैं।

अब दूसरी ओर ध्यान दीजिये, ईश्वरने हमारी सुविधाके लिये संसारमें पृथ्वी, जल, अग्नि , वायु, आकाश, सूर्य, चन्द्रमा आदि ऐसे-ऐसे अद्भुत पदार्थ बनाये हैं जिनसे हम आरामसे जीवन धारण करते हैं और सुखसे विचरते हैं। यह सब चीजें सबको बिना मूल्य, बिना किसी रुकावटके पूरी मात्रामें समानभावसे सहज ही प्राप्त हैं। कोई कैसा

भी महान् पापी क्यों न हो, भगवान्‌के इस दानसे वह वंचित नहीं रहता। संसारके विषयोंकी भी रचना ईश्वरने इस ढंगसे की है कि उनकी अवस्थापर विचार करनेसे भी बड़ा उपदेश मिलता है। हम जिस किसी भी पदार्थकी ओर नजर उठाकर देखते हैं, वही क्षय और नाश होता हुआ प्रतीत होता है। यह भी एक दयाका ही निदर्शन है। संसारके इन सब पदार्थोंको देखनेसे हमें यह उपदेश मिलता है कि स्त्री, पुत्र, धन, संसारके सम्पूर्ण पदार्थ एवं हमारा शरीर भी क्षणभंगुर और नाशवान् है, इसलिये हमको उचित है कि अपने अमूल्य समयको इन विषयोंके भोगनेमें व्यर्थ न बितावें।

परमात्माकी दया तो समानभावसे सबपर सदा ही है, परन्तु मनुष्य जब परमात्माकी शरण हो जाता है तब ईश्वर उसपर विशेष दया करते हैं। जैसे सुनार सुवर्णको आगमें तपाकर पवित्र बना लेता है,

वैसे ही परमात्मा अपने भक्तको अनेक प्रकारकी विपत्तियोंके द्वारा तपाकर पवित्र बना लेते हैं। जब भक्त प्रह्लादने भगवान्‌की शरण ली, तब पहले-पहल उसपर कैसी-कैसी विपत्तियाँ आयीं! वह अग्निमें जलाया गया, जलमें डुबाया गया, उसे विष पिलाया गया, वह शस्त्रोंसे कटवाया गया। परन्तु जैसे-जैसे उसे संकटोंकी प्राप्ति अधिकाधिक होती गयी, वैसे-ही-वैसे दयाका अनुभव अधिकतर होता गया और इस कारण वह परमपवित्र होकर अन्तमें परमात्माको प्राप्त हो गया। लोगोंकी दृष्टिमें तो यही बात है कि प्रह्लादको बहुत दुःख झेलना पड़ा, उसपर अनेक अत्याचार हुए, उसे बड़ी-बड़ी विपत्तियोंका सामना करना पड़ा। कोई-कोई भोले भाई तो यहाँतक भी कहते हैं कि भगवान्‌की भक्ति करनेवालोंको भगवान् उत्तरोत्तर अधिक विपत्ति देते हैं, परन्तु वे बेचारे इस बातको समझते नहीं कि

भगवान्‌की विधान की हुई इस विपत्तिमें कितनी भारी सम्पत्ति छिपी रहती है।

प्रह्लाद इस तत्त्वको समझता था, इसलिये उसे इन विपत्तियोंमें भगवद्दयारूपी सम्पत्तिके प्रत्यक्ष दर्शन होते थे। जो मनुष्य भक्त प्रह्लादकी तरह प्राप्त हुई विपत्तियोंमें परमात्माकी दया देखता है, उसके लिये वे सारी विपत्तियाँ तत्काल ही सम्पत्तिके रूपमें परिणत हो जाती हैं।

आप प्रह्लादके चरित्रको पढ़िये, उसके वचनोंमें पद-पदपर कितना धैर्य, निर्भयता, शान्ति, निःस्पृहता, निष्कामता और आनन्द चमकता है। अग्निमें न जलकर प्रह्लाद कहते हैं—

तातैष वह्निः पवनेरितोऽपि
न मां दहत्यत्र समन्ततोऽहम्।
पश्यामि पद्मास्तरणास्तृतानि
शीतानि सर्वाणि दिशाम्मुखानि॥

(विष्णु० १। १७। ४७)

'हे तात! यह महान् वायुसे प्रेरित धधकती हुई भी अग्नि मुझे नहीं जलाती (इसमें आप कोई आश्चर्य न करें), क्योंकि मैं इस अग्निमें और अपनेमें समभावसे उस एक ही सर्वव्यापी भगवान् विष्णुको देखता हूँ, अतएव अग्निकी ये लपटें मुझको चारों ओर शीतल कमलपत्रके सदृश बिछी हुई सुखमयी प्रतीत होती हैं।'

जब गुरुपुत्र शण्डामर्कके द्वारा उत्पन्न की हुई कृत्याने प्रह्लादको मारनेमें असमर्थ होकर शण्डामर्कको ही मार डाला, तब दयामय प्रह्लाद श्रीभगवान्‌से कहने लगे—

यथा सर्वगतं विष्णुं मन्यमानोऽनपायिनम्।
चिन्तयाम्यरिपक्षेऽपि जीवन्त्वेते पुरोहिताः॥
ये हन्तुमागता दत्तं यैर्विषं यैर्हुताशनः।
यैर्दिग्गजैरहं क्षुण्णो दष्टः सर्पैश्च यैरपि॥

तेष्वहं मित्रभावेन समः पापोऽस्मि न क्वचित्।
तथा तेनाद्य सत्येन जीवन्त्वसुरयाजकाः॥

(विष्णु० १। १८। ४१—४३)

'यदि मैं सर्वगत और अक्षय श्रीविष्णुको शत्रु-पक्षमें भी देखता हूँ तो ये पुरोहित जीवित हो जायँ। जो मेरेको मारनेके लिये आये, जिन्होंने विष दिया, अग्नि लगायी, जिन दिग्गजोंने रौंदा, सर्पोंने काटा, उन सबमें यदि मैं मित्रभावसे सम हूँ एवं कहीं भी मेरी पापबुद्धि नहीं है तो उस सत्यके प्रभावसे इसी समय ये पुरोहित जीवित हो जायँ।' उसके बाद ही पुरोहित जी उठे।

साधन-कालमें भगवान् अपने भक्तोंपर जो विपत्तियाँ डालते हुए-से दीखते हैं और किसी-किसीकी मान, बड़ाई, प्रतिष्ठा और सम्पत्ति भी हर लेते हैं, सो किसलिये? उन्हें अज्ञानरूपी निद्रासे जगानेके लिये, साधनकी रुकावटोंसे हटानेके लिये,

पापोंसे पवित्र करनेके लिये, कायरताका नाश करके उन्हें वीर और धीर बनानेके लिये, सच्ची भक्तिको बढ़ानेके लिये और उनकी ऐसी विमल कीर्ति फैलानेके लिये, जिसे गा-गाकर लोग पवित्र हो जायँ। क्योंकि विपत्तिकालमें भगवान् जितने याद आते हैं उतने सम्पत्तिकालमें नहीं आते। इसीलिये कुन्तीदेवीने भगवान्‌से विपत्तिका वर माँगा था—

विपदः सन्तु नः शश्वत्तत्र तत्र जगद्गुरो।
भवतो दर्शनं यत्स्यादपुनर्भवदर्शनम्॥

(श्रीमद्भा० १। ८। २५)

'हे जगद्गुरो! हम चाहती हैं कि पद-पदपर हमेशा हमपर विपत्तियाँ आवें, जिनसे हमें संसारसे छुड़ानेवाला आपका दुर्लभ दर्शन मिलता रहे।'

परन्तु यह कोई नियम नहीं कि भक्ति करने-वालेको भगवान् अवश्य विपत्ति देते हैं। जैसा अधिकारी होता है, वैसी ही व्यवस्था की जाती है।

यदि आप खयाल करके देखें तो आपको स्पष्ट दीखेगा कि परमात्माकी दयाकी निरन्तर अनवरत वर्षा हो रही है। इस वर्षाकी शीतल सुधाधाराका आनन्द उन्हींको मिलता है जो भगवान्‌की शरण होकर उनकी दयाकी ओर ध्यान देते हैं। दयाकी ऐसी अनवरत वृष्टि होती रहनेपर भी उनकी दयाका प्रभाव न जाननेके कारण लोग लाभ नहीं उठा सकते। कोई तो मूर्खतावश छाता लगा लेते हैं और कोई मकानमें घुस जाते हैं। कभी-कभी परमात्माकी विशेष दयासे पूर्व पुण्य-पुंजके कारण उनके प्रेम, प्रभाव, गुण और रहस्यकी अमृतरूप कथा बिना चाहे और बिना चेष्टा किये स्वतः ही आ प्राप्त होती है, उसके तत्त्वको नहीं समझनेके कारण उपेक्षा करके जो मनुष्य चला जाता है, उसका अमृतरूपी वर्षासे भागकर घरमें घुस जाना है और कथामें उपस्थित रहकर जो आलस्य और नींद लेना है, वह अपने ऊपर छाता लगा लेना है।

ईश्वरकी दयाके लिये क्या कहा जाय? सम्पूर्ण जीवोंके मस्तकपर उनका निरन्तर हाथ है, परन्तु अभागे जीव उस हाथको हटाकर परे कर देते हैं।

जब यह जीव कोई बुरा काम करनेके लिये तैयार होता है तो प्रायः ही उसीके हृदयसे यह आवाज आती है कि 'यह बुरा काम है।' इस प्रकारकी जो चेतावनी है, यह ईश्वरका मस्तकपर हाथ है। ईश्वर उसको समयपर चेता देते हैं। मालूम होता है, मानो हृदयस्थ कोई पुरुष निषेध करता है कि यह काम बुरा है, परन्तु काम या लोभके वश होकर ईश्वरकी आज्ञाकी अवहेलना करके बुरे काममें प्रवृत्त हो ही जाता है, यही उस कृपासिन्धुकी कृपाकी अवहेलना करना है अर्थात् अपने मस्तकपर जो उनका हाथ है उसको परे हटाना है।

समय-समयपर परमेश्वर उत्तम काम करनेके लिये भी हृदयमें प्रेरणा करते हैं। भजन-ध्यान,

सेवा-सत्संग आदि करनेकी स्फुरणा होती है, परन्तु यह जीव उसकी अवहेलना करके संसारके विषयभोग और प्रमादमें लग जाता है, यह भी उस दयामयका हमारे सिरपर जो हाथ है उसको परे करना है।

इसके सिवा जब संसारका ऐश्वर्य अर्थात् स्त्री, पुत्र और धनादि आकर प्राप्त होते हैं, जिसको हम सुख और सम्पत्तिके नामसे कहते हैं, उनमें भी समय-समयपर क्षय और नाशकी भावना उत्पन्न होती है और वह भी स्वाभाविक हमको क्षणभंगुर और नाशवान् प्रतीत होते हैं। ऐसी प्रतीति होनेपर भी हम उसका त्याग या सदुपयोग नहीं करते, यह उस दयामय ईश्वरका हाथ अपने मस्तकसे परे हटाना है।

ईश्वरकी प्राप्तिके साधनमें बाधकरूप जो संसारके धन-जन-मान-ऐश्वर्य आदिके नाश होनेपर पुनः उन क्षणभंगुर, नाशवान्, दुःखमय पदार्थोंकी

प्राप्तिकी जो इच्छा करना है, यह भी उस दयामयका हाथ अपने मस्तकसे परे हटाना है।

जब भगवान्‌के नाम, रूप, गुण और प्रभावकी स्वतः ही स्फुरणा होती है तो समझना चाहिये कि यह उनकी सबसे विशेष दया है। तिसपर भी हम उनको भुला देते हैं और स्मरण रखनेकी उचित कोशिश नहीं करते हैं, यही उस दयामयकी दयाका हाथ हमारे मस्तकसे परे कर देना है।

इसलिये हमलोगोंको चाहिये कि भगवान्‌की दयाको पहचानें और सर्वथा उनके संरक्षणमें रहकर नित्य निर्भय और परम सुखी हो जायँ।

❑❑

भगवत्कृपा
(पद-पदपर दर्शन करनेका प्रकार)

किसी भाईका प्रश्न है कि भगवत्कृपा सहैतुक होती है या निर्हैतुक? मनुष्यको सभी अवस्थाओंमें भगवान्‌की दयाका दर्शन किस प्रकार करना चाहिये?

इसके उत्तरमें मेरा निवेदन है कि भगवत्कृपाके महत्त्वको वाणीद्वारा पूर्णरूपसे वर्णन करना असम्भव है। क्योंकि भगवान्‌की दयाका महत्त्व अपार है और वाणीद्वारा जो कुछ कहा जाता है वह स्वल्प ही है; भगवान्‌की कृपाके रहस्यको जो कोई महापुरुष यत्किंचित् भी समझते हैं, वे भी जितना समझते हैं उतना वाणीद्वारा बता नहीं सकते। भगवान्‌की कृपा सब जीवोंपर सदा-सर्वदा अपार है। लोगोंका इस विषयमें जितना अनुमान है, उससे भी भगवान्‌की कृपा बहुत अधिक है। इस विषयमें 'भगवान्‌की दया' शीर्षक लेख इसके साथ छपा

है। विषय एक होनेके कारण कुछ पुनरुक्तियाँ आ सकती हैं, तथापि दोनों लेखोंको मिलाकर पढ़नेसे भगवान्‌की दयाका महत्त्व समझनेमें अधिक सहायता मिल सकती है।

वास्तवमें भगवान्‌की दया सभी प्राणियोंपर बिना किसी कारणके समभावसे सदा ही स्वाभाविक है, अतः उसे निर्हैतुक ही कहना चाहिये। परन्तु जो मनुष्य भगवान्‌की दयापर जितना अधिक विश्वास करता है, अपनेपर जितनी अधिक दया मानता है, वह उनकी दयाका तत्त्व उतना ही अधिक समझता है तथा उसे उतना ही अधिक प्रत्यक्ष लाभ मिलता है; इसलिये उसको सहैतुक भी कहा जा सकता है, किन्तु भगवान्‌का इसमें अपना कोई हेतु नहीं है।

भगवान् तो सर्वथा पूर्णकाम, सर्वशक्तिमान्, महान् ईश्वर हैं। उनमें किसी प्रकारकी कामना या इच्छाकी कल्पना ही कैसे हो सकती है, जिससे

उनकी दयामें किसी प्रकारके स्वार्थरूप हेतुको स्थान मिल सके। वे तो स्वभावसे ही—बिना कारण परम दयालु हैं, सबके सुहृद् हैं, उनकी सब क्रिया सम्पूर्ण जीवोंके हितके लिये ही होती है; वास्तवमें अकर्ता होते हुए भी वे दयावश जीवोंके हितकी चेष्टा करते हैं। अजन्मा होते हुए भी साधु पुरुषोंका उद्धार, धर्मका प्रचार और दुष्टोंका संहार* करनेके लिये एवं संसारमें अपनी पुनीत लीलाका विस्तार करके लोगोंमें प्रेम और श्रद्धाका संचार करनेके लिये समय-समयपर अवतार धारण करते हैं; निर्गुण, निराकार और निर्विकार होते हुए

* यहाँ संहाररूपसे भी भगवान् कल्याण ही करते हैं। कहा भी है—

लालने ताडने मातुर्नाकारुण्यं यथार्भके।
तद्वदेव महेशस्य नियन्तुर्गुणदोषयोः॥

'जिस प्रकार बच्चेको प्यार करने और ताड़ना देने, दोनोंमें माताकी दया ही है, उसी प्रकार जीवोंके गुण-दोषोंका नियन्त्रण करनेवाले भगवान्‌की सब प्रकारसे उनपर कृपा ही है।'

तुलसीदासजीने भी कहा है—

हेतु रहित जग जुग उपकारी।
तुम्ह तुम्हार सेवक असुरारी॥
स्वारथ मीत सकल जग माहीं।
सपनेहुँ प्रभु परमारथ नाहीं॥

इस वर्णनसे यह पाया जाता है कि महापुरुषोंका और भगवान्‌का कोई कर्तव्य और प्रयोजन न रहते हुए भी लोगोंको उन्मार्गसे बचानेके लिये एवं नीति, धर्म और ईश्वरभक्तिरूप सन्मार्गमें लगानेके लिये केवल लोक-हितार्थ उनके द्वारा सब क्रियाएँ हुआ करती हैं; इसमें उनकी अपार दया ही कारण है।

भगवान्‌के परम दयालु और सर्वशक्तिमान् होते हुए भी, समदर्शी और निःस्पृह होनेके कारण उनके द्वारा अपने-आप कोई क्रिया नहीं की जाती। श्रद्धा-प्रेमपूर्वक शरणागत होनेसे भक्तके हितके लिये ही, उनमें क्रियाका प्रादुर्भाव होता है और उनकी दयाका विकास होता है।

यहाँ यह प्रश्न उठ सकता है कि यदि इस प्रकार भगवान्‌की समानभावसे सब जीवोंपर अपार दया है, तब फिर सभी जीवोंका कल्याण क्यों नहीं हो जाता? विवेचन करनेसे इसका यही उत्तर मिलता है कि उनकी दयाके तत्त्वको न जाननेके कारण लोग उस दयासे विशेष लाभ नहीं उठा सकते। जैसे जगत्तारिणी भागीरथी गंगाका प्रवाह लोकहितार्थ निरन्तर बहता रहता है, तथापि जो गंगाके प्रभावको नहीं जानते, जो श्रद्धा-भक्तिकी कमी होनेके कारण स्नान-पानादि नहीं करते, वे उससे विशेष लाभ नहीं उठा सकते; इसी तरह भगवान्‌की दयाका प्रवाह अहर्निश गंगाके प्रवाहसे भी बढ़कर सर्वत्र बह रहा है, तो भी मनुष्य उसका प्रभाव न जाननेके कारण एवं श्रद्धा-भक्तिकी कमी होनेके कारण, भगवान्‌की शरण लेकर उनकी दयासे विशेष लाभ नहीं उठा सकते।

समानभावसे भगवान्‌की दयाका साधारण लाभ तो सब जीवोंको मिलता ही है; परन्तु जो उसकी दयाका पात्र बन जाता है, वह उससे विशेष लाभ उठा सकता है। सूर्यकी धूप और रोशनी सर्वत्र समानभावसे सबको प्राप्त होती है, अतः समान-भावसे उसका लाभ सबको मिलता है, किन्तु सूर्यमुखी काँचपर उसकी शक्तिका विशेष प्रादुर्भाव होता है, उसमें तुरंत अग्नि प्रकट हो जाती है। सूर्यमुखी काँचकी भाँति जिसका अन्तःकरण शुद्ध होता है, जिसके अन्तःकरणमें भगवान्‌पर विशेष श्रद्धा और प्रेम होता है, वह उनकी दयासे विशेष लाभ उठा सकता है।

मनुष्यके संचित, प्रारब्ध और क्रियमाण, तीनों प्रकारके कर्मोंसे ही भगवान्‌की दयाका सम्बन्ध है—पूर्वकृत पुण्य-कर्मोंका संचय भगवान्‌की दयासे ही हुआ है तथा उन संचित कर्मोंके अनुसार ही

प्रारब्धभोगका विधान भगवान् दयापूर्वक जीवोंके हितके लिये ही करते हैं। अतः भगवान्‌की दयाके रहस्यको समझनेवाला प्रारब्धभोगके समय हर एक अवस्थामें भगवान्‌की दयाका दर्शन किया करता है। क्रियमाण शुभ कर्म भी भगवान्‌की दयासे ही बनते हैं, उनकी दयासे ही मनुष्य सन्मार्गमें अग्रसर हो सकता है। अतः सभी कर्मोंसे भगवान्‌की दयाका नित्य सम्बन्ध है।

श्रद्धा-भक्तिपूर्वक विचार करनेसे क्षण-क्षणमें, पद-पदपर, हर एक अवस्थामें मनुष्यको भगवान्‌की दयाके दर्शन होते रहते हैं! सब जीवोंको जल, वायु, प्रकाश आदि तत्त्वोंसे सुखभोग मिल रहा है, उनके जीवनका निर्वाह हो रहा है, खान-पान आदि कार्य चल रहे हैं, इन सबमें ईश्वरकी समान दया व्याप्त है।

मनुष्यके शुभ और अशुभ कर्मोंके अनुसार

फलभोगकी व्यवस्था कर देनेमें भगवान्‌की दयाका ही हाथ है।

थोड़ा-सा जप, ध्यान और सत्संग करनेसे मनुष्यके जन्म-जन्मान्तरके पापोंका नाश होनेका जो भगवान्‌ने कानून बनाया है, इसमें तो भगवान्‌की अपार दया भरी हुई है।

भगवान्‌की शरण होकर प्रेम और करुणा-भावसे प्रार्थना करनेपर प्रत्यक्ष प्रकट हो जाना, भक्तके हर प्रकारके दुःखों और संकटोंको दूर करना, सब प्रकारसे शरणागतकी रक्षा करना, हर एक प्रकारके पापकर्मसे उसे बचाना, यह उनकी विशेष दयाका प्रदर्शन है। बिना इच्छा और प्रार्थनाके भी भक्त प्रह्लादकी भाँति दृढ़ विश्वास रखकर भक्ति करनेवाले भक्तके हितके लिये स्वयं प्रकट होकर उसे दर्शन देना और सम्पूर्ण संकटोंसे उसकी रक्षा करना, यह भगवान्‌की दयाका अतिशय विशेष प्रदर्शन है।

महात्मा और शास्त्रोंके द्वारा या स्वतः लोगोंके अन्तःकरणमें प्रेरणा करके अथवा स्वयं अवतार लेकर लोगोंको बुरे कर्मोंसे हटाकर अच्छे कर्मोंमें लगा देना, यह भी भगवान्‌की विशेष दयाका प्रदर्शन है।

स्त्री, पुत्र, धन और मकान आदि सांसारिक पदार्थोंकी प्राप्ति और उनका विनाश होनेमें एवं शरीरका स्वास्थ्य ठीक रहने और न रहनेमें, रोग और संकटादिकी प्राप्ति और उनके विनाशमें तथा सुख-सम्पत्ति और दुःखोंकी प्राप्तिमें भी—हर एक अवस्थामें मनुष्यको भगवान्‌की दयाका दर्शन करनेका अभ्यास करना चाहिये।

स्त्री, पुत्र, धन और मकान आदि सांसारिक पदार्थोंकी वृद्धिमें समझना चाहिये कि भगवान्‌ने पूर्वकृत पुण्यकर्मोंके फलस्वरूप ये सब पदार्थ दूसरोंको सुख पहुँचानेके लिये, श्रेष्ठ कर्म करनेके

लिये, भगवान्‌में प्रेम बढ़ानेके लिये और हर प्रकारसे ईश्वरभक्तिमें इनका प्रयोग करनेके लिये ही दिये हैं। ऐसा समझकर उन सांसारिक पदार्थोंसे जो केवल शरीरनिर्वाहमात्र ही अपना सम्बन्ध रखता है और उन सबको ईश्वरके ही काममें लगा देता है, वही ईश्वरकी दयाका रहस्य ठीक समझता है; जो उन पदार्थोंको भोगोंमें खर्च करता है, वह भगवान्‌की दयाके तत्त्वको नहीं समझता।

इन सब सांसारिक भोग-पदार्थोंके नाशके समय समझना चाहिये कि इन सबमें मेरी भोगबुद्धि और आसक्ति होनेके कारण ये ईश्वरभक्तिमें बाधक थे। अतः परम दयालु भगवान्‌ने दयावश अपनी ओर आकर्षित करनेके लिये इन सबको हटाया है, इसमें भगवान्‌की परम दया है। जिस प्रकार संसारमें देखा जाता है कि पतंगे या दूसरे इसी प्रकारके जन्तु रोशनीको देखकर उसपर आसक्त हो जाते हैं,

मोहवश उसमें उछल-उछलकर पड़ते और भस्म हो जाते हैं; उनकी ऐसी बुरी दशा देखकर दयालु मनुष्य उस रोशनीको वहाँसे हटा देता या बुझा देता है; इस कार्यमें उस मनुष्यकी उन पतंगोंपर महान् दया है, यद्यपि वे पतंग इस बातको नहीं समझते। उनकी समझमें तो उस रोशनीको हटानेवाला अत्यन्त निर्दयी और महान् शत्रु है; पर यह उनका अज्ञान है, उनकी भूल है; इसी तरह हमारे भोले भाई जो ईश्वरकी दयाका रहस्य नहीं जानते, वे भी इन सब सांसारिक पदार्थोंका अभाव होते देखकर नाना प्रकारसे ईश्वरको दोष दिया करते हैं; परन्तु भगवान् तो परम दयालु हैं, इसलिये वे उनके अपराधकी ओर नहीं देखते। तथा मुझपर परम दया करके भगवान्‌ने पूर्वकृत पापकर्मोंसे उऋण करनेके लिये, भविष्यमें पापोंसे बचानेके लिये और समस्त भोगसामग्रीको प्रत्यक्ष क्षणभंगुर दिखाकर उनमें

वैराग्य उत्पन्न करनेके लिये इन सबका वियोग किया है—ऐसा समझकर जो सांसारिक भोग-पदार्थोंके वियोगमें भी भगवान्‌की दयाका दर्शन करके सदा प्रसन्न रहता है, वही उनकी दयाके रहस्यको ठीक समझता है।

ऐसे ही जब शरीर आरोग्य रहे तो समझना चाहिये कि भगवान्‌को सर्वव्यापी समझकर सबमें भगवान्‌का दर्शन करते हुए दूसरोंकी सेवा करनेके लिये, श्रेष्ठ पुरुषोंका संग करके भगवान्‌के गुण, प्रभाव, तत्त्व और रहस्यको समझनेके लिये और उनके भजन-ध्यानका निरन्तर अभ्यास करनेके लिये भगवान् दया करके मुझे नीरोग रखते हैं—ऐसा समझकर इस क्षणभंगुर शरीरको जो परम दयालु परमात्माके काममें उपर्युक्त उद्देश्यानुसार लगा देता है, वही उनकी दयाके रहस्यको ठीक समझता है।

शरीर रोगग्रस्त होनेसे समझना चाहिये कि

पूर्वकृत पापकर्मोंसे उऋण करनेके लिये, भविष्यमें पापोंसे बचानेके लिये, शरीरमें वैराग्य उत्पन्न करनेके लिये और रोगादिमें तपबुद्धि करके उसका लाभ देनेके लिये एवं बार-बार अपनी स्मृति दिलानेके लिये भगवान्ने परम दया करके पुरस्काररूप यह अवस्था दी है—यह समझकर जो रोगादिकी प्राप्तिमें भी किसी प्रकारकी चिन्ता नहीं करके आनन्दपूर्वक अपने मनको निरन्तर भगवान्के चिन्तनमें लगा देता है तथा भगवान्के उपर्युक्त उद्देश्योंको समझ-समझकर सदा हर्षित रहता है, वही भगवान्की दयाके रहस्यको ठीक समझता है।

इसी तरह सुखी और दुःखी, महात्मा और पापी जीवोंके साथ मिलन और बिछोह होनेके समय एवं उनसे किसी प्रकारका भी सम्बन्ध होते समय, सदा भगवान्की दयाका दर्शन करना चाहिये।

अच्छे पुरुषोंसे भेंट हो तो समझना चाहिये कि

इनके गुणों और आचरणोंका अनुकरण करवानेके लिये, इनके उपदेशोंको काममें लाकर भगवान्‌में प्रेम बढ़ानेके लिये, भगवान्‌ने परम दया करके इनसे भेंट करायी है।

उनके साथ वियोग होनेपर समझना चाहिये कि ऐसे पुरुषोंका संग सदा रहना दुर्लभ है, इस महत्त्वको समझानेके लिये, पुनः उनसे मिलनेकी उत्कट इच्छा उत्पन्न करनेके लिये और उनमें प्रेम बढ़ानेके लिये भगवान् दया करके ही उनसे वियोग कराते हैं।

दुष्ट, दुराचारी पुरुषोंसे भेंट होनेपर समझना चाहिये कि दुराचारोंसे होनेवाली हानियोंको प्रत्यक्ष दिखाकर, दुर्गुण और दुराचारमें विरक्ति उत्पन्न करनेके लिये भगवान् ऐसे मनुष्योंसे भेंट कराते हैं।

उनके वियोगमें समझना चाहिये कि कुसंगके दोषोंसे बचानेके लिये ही भगवान् अपनी दयासे ऐसे दुराचारी मनुष्योंसे वियोग कराते हैं।

दुःखी मनुष्यों और जीवोंसे भेंट होनेपर समझना चाहिये कि अन्तःकरणमें करुणाभावकी वृद्धि करनेके लिये, उनकी सेवा करनेका मौका देनेके लिये और संसारमें वैराग्य उत्पन्न करनेके लिये दयामय भगवान् दया करके ही ऐसे जीवोंसे भेंट कराते हैं।

सुखी मनुष्योंसे और जीवोंसे भेंट होनेपर समझना चाहिये कि इन सबको सुखी देखकर प्रसन्न होनेकी शिक्षा देनेके लिये भगवान्‌ने दया करके इनसे भेंट करायी है।

इन सबके वियोगमें समझना चाहिये कि जनसमुदायकी आसक्तिको दूर करके, संसारमें परम वैराग्य उत्पन्न करनेके लिये और एकान्तमें रहकर भजन-ध्यानका दृढ़ अभ्यास करनेके लिये भगवान्‌ने दयापूर्वक ऐसा मौका दिया है।

इसी तरह अन्य सब घटनाओंमें सदा-सर्वदा, सभी अवस्थाओंमें भगवान्‌की दयाका दर्शन करना

चाहिये। ऐसा अभ्यास करके मनुष्य सब जीवोंपर जो भगवान्‌की अपार दयाका प्रवाह बह रहा है, उसके रहस्यको समझकर, उससे विशेष लाभ उठा सकता है।

दयामय परमेश्वरकी सब जीवोंपर इतनी दया है कि सम्पूर्ण रूपसे तो मनुष्य उसे समझ ही नहीं सकता; मनुष्य अपनी बुद्धिसे अपने ऊपर जितनी अधिक-से-अधिक दया समझता है, उतना समझना भी बहुत ही है; मनुष्य ईश्वरकृपाकी यथार्थरूपसे तो कल्पना भी नहीं कर सकता।

लोग भगवान्‌को दयासागर कहते हैं; किन्तु विचार करनेपर मालूम होता है कि यह उपमा भी पर्याप्त नहीं है, यह तो उसकी अपार दयाका किंचित् परिचयमात्र है। समुद्र परिमित— सीमाबद्ध है और भगवान्‌की दया असीम और अपार है, तथापि संसारमें समुद्रसे बड़ी वस्तु प्रत्यक्ष न होनेके

कारण लोग उसीकी उपमा देकर भगवान्‌की दयाके महत्त्वको समझानेकी चेष्टा किया करते हैं।

इस प्रकार सब जीवोंपर भगवान्‌की अपार दया होते हुए भी उसके रहस्यको न समझनेके कारण मनुष्य उससे विशेष लाभ नहीं उठा सकते और अपनी मूर्खताके कारण निरन्तर दुःखोंमें मग्न रहते हैं।

भगवान्‌की दयाका महत्त्व अपार है, उससे जो मनुष्य जितना लाभ उठाना चाहेगा, उतना ही उठा सकता है। भगवान्‌की दयाको एवं उसके रहस्य और तत्त्वको बिना समझे वह दया समानभावसे साधारण फल देती है; उसे जो जितना अधिक समझता है, उसे वह उतना ही अधिक फल देती है और समझकर उसीके अनुसार क्रिया करनेसे अत्यधिक फल देती है।

भगवान्‌की दयाका ऐसा प्रभाव है कि उसका रहस्य और तत्त्व जाननेवालेसे वह पारसमणिकी

भाँति स्वयं क्रिया करवा लेती है। अर्थात् जैसे किसी दरिद्री मनुष्यके घरमें पारस पड़ा हो पर उसे उसका ज्ञान न हो, वह उसे साधारण पत्थर ही समझ रहा हो, तो वह मनुष्य उससे विशेष लाभ नहीं उठा सकता, केवल पत्थर-जैसा ही काम ले सकता है। किन्तु ऐसा करते-करते यदि अकस्मात् उस पारसका लोहेसे सम्बन्ध हो जाय तो वह उसे विशेष लाभ भी दे देता है; एवं ऐसा अद्भुत चमत्कार देखकर या किसी दूसरे गुणज्ञ पुरुषके समझानेसे, वह उस पारसको ठीक पारस समझ लेता है, उस पारसके गुण और प्रभावका उसे भलीभाँति ज्ञान हो जाता है, तब ऐसा ज्ञान उस मनुष्यसे विशेष क्रिया करवाकर, उसे पूर्ण फलका भागी बना देता है। इसी तरह जब किसी विशेष घटनासे या किसी महापुरुषके संगसे, भगवान्‌की दयाके रहस्य, तत्त्व और प्रभावका मनुष्यको कुछ

ज्ञान हो जाता है तो वह ज्ञान उससे स्वयं क्रिया करवाकर उसे पूर्ण फलका भागी बना देता है।

जो मनुष्य इस रहस्यको समझ जाता है कि भगवान् परम दयालु तथा सबके सुहृद् हैं, उसे तुरंत ही परम शान्ति मिल जाती है। भगवान्ने स्वयं कहा है—

सुहृदं सर्वभूतानां ज्ञात्वा मां शान्तिमृच्छति॥

(गीता ५। २९)

'हे अर्जुन! मेरा भक्त मुझे सम्पूर्ण भूत-प्राणियोंका सुहृद् अर्थात् स्वार्थरहित दयालु और प्रेमी तत्त्वतः जानकर शान्तिको प्राप्त होता है।'

क्यों न हो। हम प्रत्यक्ष देखते हैं कि जब किसी साधारण राजाधिराज या सेठ-साहूकारके विषयमें हमारा यह विश्वास हो जाता है कि अमुक राजा या सेठ बड़ा दयालु और शक्तिशाली है, वह सबपर दया करता है एवं मुझसे मिलना चाहता है और प्रेम करना चाहता है तो हमें कितना आनन्द होता

है, कितना आश्वासन मिलता है, कितनी शान्ति मिलती है एवं किस प्रकार उससे मिलकर उसकी दयासे लाभ उठानेकी चेष्टा होती है। फिर सर्वशक्तिमान्, असंख्य कोटि ब्रह्माण्डोंके मालिक भगवान्‌के विषयमें जिसको यह विश्वास हो जाय कि भगवान् परमदयालु, सबके सुहृद् हैं, वे मुझसे प्रेम करना चाहते हैं, मुझपर उनकी अपार दया है, मिलनेकी इच्छावालोंसे वे स्वयं मिलना चाहते हैं, पर वह श्रद्धालु भक्त भगवान्‌की उस दयासे परम लाभ उठानेकी चेष्टा करे और उसे परम शान्ति प्राप्त हो, इसमें तो आश्चर्य ही क्या है। इस प्रकार भगवान्‌की दयाके रहस्यको समझनेवाला स्वयं भी परम दयालु और सबका सुहृद् बन जाता है, उसे स्वयं भगवान् मिल जाते हैं, वह भगवान्‌का अतिशय प्यारा बन जाता है, भगवान्‌की और उसकी एकता हो जाती है।

उस परम दयालु, सबके सुहृद्, सर्वशक्तिमान् परमेश्वरकी अपार दया हमलोगोंपर स्वाभाविक है। क्षण-क्षणमें उसकी दयाका स्वाभाविक लाभ हमको मिल रहा है, वे स्वयं अवतार लेकर अपनी दयाका प्रत्यक्ष दर्शन करा गये हैं; इसलिये उसकी ओर लक्ष्य करके भगवान्‌की दयाके रहस्य, प्रभाव और तत्त्वको समझनेके लिये हमें तत्पर हो जाना चाहिये। क्योंकि यह मनुष्य-शरीर भगवान्‌की निर्हैतुकी दयासे ही प्राप्त हुआ है, इसीमें यह जीव भगवान्‌की दयाको समझकर उनका परम प्रेमपात्र बन सकता है। क्षण-क्षणमें आयु नष्ट हो रही है, फिर ऐसा मौका मिलना असम्भव है। गया हुआ समय वापस नहीं मिल सकता, अतः ऐसे अमूल्य मनुष्य-जीवनको विषय-भोगोंके भोगनेमें, मोह-मायामें, आलस्य और प्रमादमें व्यर्थ नहीं खोना चाहिये।

□□

भगवान्‌की दयाके कुछ अमृत-कण

दयासागर भगवान्‌की जीवोंपर इतनी अपार दया है कि जिसकी कोई सीमा ही नहीं है।

× × ×

भगवान् श्रीरामचन्द्रजीको दयाका सागर कहें, तब भी उनकी अपरिमित दयाका तिरस्कार ही होता है। जीवोंपर उनकी जो दया है, वह कल्पनातीत है।

× × ×

मनुष्य अपनी ऊँची-से-ऊँची कल्पनासे उनकी दयाका जहाँतक अनुमान लगाता है, भगवान्‌की दया उससे अनन्तगुना अधिक ही नहीं, असीम और अत्यन्त विलक्षण है। भगवान् वस्तुतः दयामय ही हैं— *है तुलसिहि परतीति एक प्रभु 'मूरति कृपामई है॥'*

× × ×

परमात्माकी प्राप्ति परमात्माकी दयासे ही होती है, दया ही एकमात्र कारण है। परन्तु यह दया

मनुष्यको अकर्मण्य नहीं बना देती। परमात्माकी दयासे ही ऐसा परम पुरुषार्थ बनता है। जीवका अपना कोई पुरुषार्थ नहीं, वह तो निमित्तमात्र होता है।

× × ×

दया और प्रेमका बड़ा भारी समुद्र उमड़ा हुआ है—भरा हुआ है। उसमें अपने-आपको डुबो दें। चारों तरफ बाहर-भीतर, नीचे-ऊपर सर्वत्र ईश्वरकी दया और प्रेमका समुद्र परिपूर्ण है।

× × ×

ईश्वर दयालु हैं, प्रेमी हैं। उनकी दया और प्रेम सब जगह परिपूर्ण हो रहे हैं। अणु-अणुमें उनकी दया और प्रेमको देख-देखकर हमें मुग्ध होना चाहिये। हर समय प्रसन्न रहना चाहिये। इसको साधन बना लेना चाहिये।

× × ×

जैसे सूर्यकी धूपमें हम बैठते हैं—हमारे चारों ओर धूप-ही-धूप पूर्ण है, उसी तरह परमात्माकी दया और प्रेम सब जगह पूर्ण है।

× × ×

कोई स्थान उसकी दया और प्रेमसे खाली नहीं।

× × ×

सुहृदं सर्वभूतानां ज्ञात्वा मां शान्तिमृच्छति॥

(गीता ५। २९)

ईश्वर परम सुहृद् है। सुहृद्‌का अर्थ क्या है? दया और प्रेम जिसमें हो उसका नाम सुहृद् है। उसकी दया और प्रेम अनन्त है, अपार है। अणु-अणुमें जर्रे-जर्रेमें व्याप्त हो रहे हैं।

× × ×

उस परम दयालु, सबके सुहृद्, सर्वशक्तिमान् परमेश्वरकी अपार दया हमलोगोंपर स्वाभाविक है।

क्षण-क्षणमें उसकी दयाका स्वाभाविक लाभ हमको मिल रहा है, वे स्वयं अवतार लेकर अपनी दयाका प्रत्यक्ष दर्शन करा गये हैं, इसलिये उसकी ओर लक्ष्य करके भगवान्‌की दयाके रहस्य, प्रभाव और तत्त्वको समझनेके लिये हमें तत्पर हो जाना चाहिये।

× × ×

भगवान्‌की दयाका महत्त्व अपार है, उससे जो मनुष्य जितना लाभ उठाना चाहेगा, उतना ही उठा सकता है। भगवान्‌की दयाको एवं उसके रहस्य और तत्त्वको बिना समझे वह दया समानभावसे साधारण फल देती है, उसे जो जितना अधिक समझता है, उसे वह उतना ही अधिक फल देती है और समझकर उसके अनुसार क्रिया करनेसे अत्यधिक फल देती है।

× × ×

जैसे सूर्यका प्रकाश समभावसे सर्वत्र होनेपर भी उज्ज्वल होनेके कारण काँच उसका विशेष पात्र है, क्योंकि वह सूर्यका प्रतिबिम्ब भी ग्रहण कर लेता है और काँचोंमें भी सूर्यमुखी काँच तो सूर्यकी शक्तिको लेकर वस्त्रादि पदार्थोंको जला भी डालता है। इसी प्रकार सब जीवोंपर प्रभुकी दया समानभावसे रहते हुए भी जो मनुष्य उस दयाके तत्त्व और प्रभावको विशेषरूपसे जानते हैं वे तो उस दयाके द्वारा समस्त पाप-तापोंको सहज ही भस्म कर डालते हैं।

× × ×

प्रभु असम्भवको भी सम्भव करनेवाले हैं—वे अपने दासोंके दोषोंकी ओर देखते ही नहीं। वे बिना ही कारण दासोंपर दया और प्रेम करते हैं। उनका स्वभाव ही ऐसा है।

× × ×

भगवान् हमलोगोंके साथ क्रीड़ा करनेके लिये हमारे-जैसे बनकर हमारे इस भूमण्डलमें उतर आते हैं, इससे बढ़कर जीवोंपर भगवान्‌की और क्या कृपा होगी ?

× × ×

भगवान् तो कृपाके आकर हैं। कृपा करना उनका स्वभाव ही है। कृपा किये बिना उनसे रहा नहीं जाता।

× × ×

उनकी दया, प्रेम सर्वत्र परिपूर्ण हो रहे हैं। वे दर्शन देनेको तैयार हैं। वे सब प्राणियोंके सुहृद् हैं।

× × ×

यह मनुष्य-शरीर भगवान्‌की निर्हैतुकी दयासे प्राप्त हुआ है। इसीसे यह जीव भगवान्‌की दयाको समझकर उनका प्रेमपात्र बन सकता है।

× × ×

भगवान्‌की दयाका ऐसा प्रभाव है कि उसका रहस्य और तत्त्व जाननेवालेसे वह पारसमणिकी भाँति स्वयं क्रिया करवा लेती है।

× × ×

दयालु डॉक्टर जैसे पके हुए फोड़ेमें चीरा देकर सड़े हुए मवादको बाहर निकालकर उसे रोगमुक्त कर देता है, इसी प्रकार भगवान् भक्तके हितार्थ कभी-कभी कष्टरूपी चीरा लगाकर उसे नीरोग बना देते हैं। इसमें उनकी दया ही भरी रहती है।

× × ×

जो कुछ भी ईश्वरका विधान है उसमें हित ही भरा है। कहीं भी अहित दीखता है तो यह अपनी समझकी कमी है।

× × ×

अणु-अणुमें सब समय, सब देश और सब वस्तुमें अपना हित ही देखे, यह देखना ही सर्वत्र

उसकी दयाको देखना है। विश्वासपूर्वक मान लें बस, फिर काम खतम।

× × ×

यदि हम दृढ़ विश्वास कर लें कि वे तो बड़े ही दयालु हैं, उनके न मिलनेमें हमारी बेसमझी ही कारण है। हमको मिलेंगे, जरूर मिलेंगे, आज ही मिलेंगे—ऐसा दृढ़ निश्चय कर लें तो आज ही मिल जायँगे। इसमें तनिक भी शंका नहीं है।

× × ×

केवल मान लेना ही साधन है। जप या ध्यान—कुछ भी करनेकी बात नहीं कही। केवल मान लो बस इतना ही करना है। वह परम सुहृद् हैं जिसमें अपार दया हो—हेतुरहित प्रेम हो। भगवान्‌की दया अपार है। वह अपार दयादृष्टिसे हमें देख रहा है फिर किस बातकी चिन्ता है।

× × ×

हर समय यह भाव जाग्रत् रहना चाहिये। अहा, ईश्वरकी हमपर कितनी दया है। ईश्वरका हमपर कितना प्रेम है। सबपर समानभावसे अपार दया है। जब इतनी दया है, तब हमको भय, चिन्ता, शोक करनेकी क्या आवश्यकता है। हम चिन्ता, भय करें यह तो हमारी मूर्खता है। भय किसका? न वहाँ भय है, न चिन्ता है, न मोह है। यह हमारी बेसमझी थी—हम जानते नहीं थे कि प्रभु इतने दयालु हैं। अब कहाँ चिन्ता? कहाँ भय, कहाँ शोक, ईश्वरकी दया सर्वत्र है। सर्वत्र उसके प्रेमकी छटा छा रही है। फिर हम क्यों भय करें। वह प्रेमका महान् समुद्र है, उसमें हम डूबे हुए हैं—प्रेम-जलसे भीगे हुए हैं—मग्न हो रहे हैं। यह भाव जब दृढ़ हो जायगा तब शान्ति और आनन्दकी बाढ़ प्रत्यक्ष दीखने लगेगी। फिर प्रेम आनन्दके रूपमें परिणत हो जायगा, वही परमात्माका स्वरूप है।

× × ×

सारी माताओंके हृदयोंमें अपने पुत्रोंपर जो दया या स्नेह है, वह सब मिलकर भी उन दयासागरकी दयाके एक बूँदके बराबर भी नहीं है।

× × ×

हम बेसमझीके कारण ही दुःखी हो रहे हैं। ईश्वरकी दया और प्रेम तो सब जगह पूर्ण हो ही रहे हैं। हम मानते नहीं तभी हम दुःखी होते हैं।

× × ×

भगवान्‌की दयाका प्रभाव अहर्निश गंगाके प्रभावसे भी बढ़कर सर्वत्र बह रहा है, तो भी मनुष्य उसका प्रभाव न जाननेके कारण एवं श्रद्धा-भक्तिकी कमी होनेके कारण भगवान्‌की शरण लेकर उनकी दयासे विशेष लाभ नहीं उठा सकते।

× × ×

भगवान्‌की दया तो सदा ही सबपर समान-भावसे है, परन्तु जबतक उसकी अपार दयाको

मनुष्य पहचान नहीं लेता, तबतक उसे दयासे लाभ नहीं होता।

× × ×

प्रभुकी दया सबके ऊपर ही अपार है, किन्तु हमलोग इस बातको अज्ञानके कारण समझते नहीं हैं, विषय-सुखमें भूले हुए हैं। इसलिये उस दयासे पूरा लाभ नहीं उठा सकते।

× × ×

बस, केवल उसकी दयापर निर्भर होना चाहिये।

× × ×

भगवान्‌की दया और प्रेमका स्मरण कर हर समय भगवत्प्रेममें मुग्ध और निर्भय रहे। भगवच्चिन्तनमें खूब प्रेम और श्रद्धाकी वृद्धि करे। यह बड़ी ही मूल्यवान् चीज है।

× × ×

यदि कहें कि किस बातको लेकर खुश रहें तो इसका उत्तर यह है कि भगवान्‌की दयाको देख-

देखकर। देखो, भगवान्‌की तुमपर कितनी दया है। अपार दया समझकर इतना आनन्द होना चाहिये कि वह हृदयमें समावे नहीं। हर समय आनन्दमें मुग्ध रहें। बार-बार प्रसन्न होवें। अहा! प्रभुकी कितनी दया है। यही सबसे बढ़कर साधन है और यही भक्ति है एवं इसीका नाम शरण है।

× × ×

भगवान्‌की दया दोनों रूपोंसे सामने आती है। कहीं वह प्रेमके रूपमें दर्शन देती है, कहीं दण्डके रूपमें।

× × ×

उनकी प्रत्येक क्रियामें जगत्‌का हित भरा रहता है। भगवान् जिनको मारते या दण्ड देते हैं उनपर भी दया ही करते हैं, उनका कोई भी विधान दया और प्रेमसे रहित नहीं होता। इसलिये भगवान् सब भूतोंके सुहृद् हैं।

× × ×

सुख-दुःख जो भी प्राप्त हो, उसमें उसकी दया देखें। अपने द्वारा की जानेवाली क्रियामें 'रुचि' देखें कि भगवान्‌की 'रुचि' क्या है जिनकी दया और रुचिका खयाल हो उस पुरुषके स्वरूपका खयाल तो दोनोंके साथ ही है।

× × ×

हानि-लाभ, जय-पराजय एवं सुख-दुःखादिमें समानरूपसे ईश्वरकी दयाका दर्शन करे।

× × ×

शरीरको समर्पित कर देनेपर तत्सम्बन्धी सुख-दुःखोंमें साधकको भगवान्‌की दया स्पष्ट रूपसे दीखने लगती है।

□□